समृद्धि के बहुआयामी पर्याय

डॉ. अंजना चतुर्वेदी

प्राध्यापक, अर्थशास्त्र

शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

सारांश -

समृद्धि का सामान्य अर्थ भौतिक पूँजी की उपलब्धता को मान लिया जाता है परंतु इसके एकधिक अर्थ होते है। एक राष्ट्र व देश के संदर्भ में वहाँ उपलब्ध प्राकृति संसाधन जलवायु खाद्यान्य की उपलब्धता एवं जनसंख्या का स्वरूप या संरचना भी समृद्धि के पर्याय है । भारत के संदर्भ में तथ्य यह प्रमाणित करते है कि प्राकृति संसाधन, पूँजी, खाद्य पदार्थ एवं जनसंख्या के हिसाब से हमारा देश समृद्धशाली होने की श्रेणी में आता है।

मुख्य शब्द - समृद्धि प्रकृातिक संसाधन, खाद्यान्य कृषि जनसंख्या, पूँजी।

समृद्धि अथवा सम्पन्नता का सामान्य अर्थ भौतिक पूँजी की उपलब्धता से होता है सम्पन्नता व्यक्ति की हो अथवा राष्ट्र की उस कुल संचित पूँजी की मात्रा के आधर पर ही उसका क्रम निर्धारित होता है यथा ''1000 अरब डालर से अधिक संपत्ति होने वाले मुकेश अंबानी प्रथम भारतीय बने।[1] दैनिक भास्कर में प्रकाशित यह पक्तिंया इस वात की पुष्टि करती है। परंतु यदि किसी राष्ट्र की समृद्धि अथवा सम्पन्नता की वात करे तो पूँजी की मात्रा के अतिरिक्त प्राकृतिक तत्व भी समृद्धि के सूचक होते है और इस दृष्टिकोण से - भारत प्राकृतिक संसाधनों की दृष्टि से एक सम्पन्न देश है।[2]

जिस देश में खनिज, वन, पानी, उपजाऊ मिट्टी शक्ति के साधन एवं जल पर्याप्त मात्रा होगा वह उसकी वास्तविक पूँजी होगी। जिस भूमि पर समस्त विश्व टिका है, एवं चलायमान है, उसकी मात्रा भी हमारे पास पर्याप्त हैं। ''भारत का कुल क्षेत्र फल 32,87,263 वर्ग किमी है जो विश्व का 2.4 प्रतिशत है। क्षेत्र फल की दृष्टि से भारत का स्थान सम्पूर्ण संसार में सातवा है।[3] इसी तरह जल एवं वन सम्पदा की कमि भी हमारे देश में नहीं है। भारत में वनों का क्षेत्र फल लगभग 6.8 करोड़ हेकट्येर है जो भौगोलिक क्षेत्र का 22% है।[4] वन जल का कारक भी होते है भारत में सतही जल की मात्रा 170 मिलियन हेक्टेर मीटर प्रतिवर्ष है।[5] खनिज का भी हमारे देश में पर्याप्त भंडार है एवं कई खनिज उपलब्धता की दृष्टि से भारत का विश्व में प्रथम स्थान है। अभ्रक के उत्पादन में भारत संपूर्ण विश्व के उत्पादन का 70 से 80 प्रतिशत तक उत्पादन करता है।[6] विश्व में ब्राजील के बाद भारत दूसरा देश है जहाँ उत्तम प्रकार का लोहा पाया जाता है, एक अनुमान के अनुसार विश्व के एक चौथाई लोहे का भंडार भारत में है।[7]

समृद्धि का अर्थ भोज्य पदार्थों की पर्याप्त उपलब्धता से भी होता है यदि किसी व्यक्ति अथवा देश के पास पर्याप्त धन सम्पदा हो, खनिज हो, प्राकृतिक भंडार हो परंतु यदि खाद्यान्य का अभाव हो तो उसे सम्पन्न नहीं कहा जा सकता। हमारे देश की अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्वपूर्ण स्थान है। कृषि को समस्त उद्योगों की जननी मानव जीवन की पोषक, प्रगति का सूचक तथा प्रसन्नता का सूचक कहा जा सकता है । वर्तमान समय में खाद्यान्य का उत्पादन कृषि का एक अंग मात्र रह गया है, आधुनिक कृषि ने व्यवसाय का रूप धारण कर लिया है। आधुनिक युग में कृषि के अन्तर्गत वे सभी उद्योग शामिल किए जाते है जो अपने कच्चे माल के लिए कृषि पर निर्भर है। भारत एक कृषि प्रधान देश है। इस कारण कृषि आधारित उद्योगों के विकास की अपार संभावनाएं है। प्राचीन काल से ही कृषि मानव जीवन यापन का प्रमुख साधन रही है। आधुनिक युग में भी कृषि ही विश्व की अधिकांश जनसंख्या का प्रमुख व्यवसाय एवं आय का स्त्रोत है। वास्तव में कृषि समस्त उद्योगों की जननी, मानव जीवन की पोषक, प्रगति की सूचक तथा सम्पन्नता का प्रतीक समझी जाती है। देश विकसित हो अथवा विकासशील उनका आधार कृषि ही होता है। इसी कारण कोई देश आर्थिक प्रगति के उच्चतम स्तर पर पहुँच कर भी कृषि की उपेक्षा नहीं कर सकता। यह महात्मा गांधी के इस कथन से स्पष्ट है कि - ''प्रारम्भ से ही यह मेरा अटूट विश्वास रहा है कि केवल कृषि ही देश के लोगों को अचूक एवं सतत् सहायता प्रदान करती है।[8] कृषि वास्तव में एक अर्थव्यवस्था की रीढ़ होती है खाद्यान्य उपलब्ध कर जहाँ वह मानव शरीर का पोषण करती है वहीं आय का साधन बन आगे बढने का साधन बनती है। व्यक्ति एवं राष्ट्र के लिए कृषि समानरूप से महत्वपूर्ण है। हमारे देश में निहित परम्पराएँ भी यही संदेश देती है कि जिसके घर में पर्याप्त खाद्यान्न भंडार है वह गरीब नही कहलाता है। हमारे यहाँ पूरे वर्ष के लिए खाद्य पदार्थ संग्रहीत करने की प्रथा भी इसकी पुष्टि करती है। घरों में खाद्यान्य की वर्ष भर की आपूर्ति एक तनाव रहित वातावरण का निर्माण करती है एवं अन्य आय बढाने में साधनों पर विचार करने एवं कार्य करने के लिए मानसिकता तैयार करती है। कोरोना काल में इस बात को प्रमाणित किया जब हमने अमेरिका जैसे विकसित देश में खाद्य पदार्थो के लिए लम्बी लम्बी कतारे देखी जबकि हमारे देश में लोग जरूरत मंदों को खाद्यान्य बाँटने का भी कार्य कर रहे थे। कृषि इस वजह से भी महत्वपूर्ण हो जाती है कि वह आय का एवं रोजगार का साधन है। हम जानते है कि कृषि के विकास के साथ -साथ राष्ट्रीय आय में कृषि का हिस्सा घटने लगता है ''भारत में 1950-51 में राष्ट्रीय आय में कृषि का योगदान 55.40% था एवं वर्तमान में घटकर 35% तक शेष रह गया है।[9]

कृषि का घटता योगदान बताता है कि विकास की गति में वृद्धि हो रही है जो सम्पन्नता अथवा समृद्धि का द्योतक है। समृद्धि के प्रतीक सम्पूर्ण तत्व मात्र एक कारक पर निर्भर है और वह है मनुष्य। मानव एक साधन भी है और साध्य भी अर्थात् सारी सम्पन्नता मनुष्य के लिए है उसी के द्वारा अर्जित की गई है। अतः स्पष्ट है कि मनुष्य ही सब कार्यो का कारक है एवं कारण भी। किसी भी देश के निर्माण में एवं आर्थिक विकास में वहां की जनसंख्या महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। मानव उत्पत्ति का सजीव साधन है तथा अन्य साधन निष्क्रिय है, अतः मानव ही अपनी बुद्धि एवं कौशल से निर्जीव संसाधनों का दक्षता पूर्ण उपयोग कर उनका अनुकूलनतम

प्रयोग कर विकास एवं समृद्धि -संवृद्धि का मार्ग प्रशस्त करता है। समृद्धि का एक आयाम और सबसे अधिक महत्वपूर्ण कारक जन शक्ति है क्योंकि अर्थव्यवस्था का केन्द्र बिंदु वही है, वही उत्पादक है तो उपभोक्ता भी वही है और वह विक्रेता है तो ग्राहक भी, व्यापारी वह है करदाता भी वही है। प्रत्येक क्रिया के केन्द्र में मनुष्य है। स्पष्ट है समृद्धि का एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक मनुष्य अर्थात उस राष्ट्र की जनसंख्या है। जनसख्या की गुणवत्ता अथवा रचना किसी देश की प्रगति को प्रभावित करती है। प्रो. कावैर ने कहा है कि - ''सम्पन्न वातावरण के मध्य भी समुदाय एवं राष्ट्र निर्धन रहे है अथवा मिट्टी की उर्वरता तथा प्राकृतिक साधनों के होते भी पतन की ओर अथवा गरीबी की ओर चले गए है। मात्र इस कारण कि वहाँ मानवीय तत्व निम्न कोटि का रहा है, अथवा उसे बिगडे जाने के लिए छोड दिया।''[10] स्पष्ट है कि मनुष्य साधन एवं साध्य दोनों है अतः मानवीय संसाधन भी किसी राष्ट्र की समृद्धि का कारक है परंतु यह भी आवश्यक है कि मानवीय संसाधन गुणात्मक दृष्टि से भी अच्छा एवं पर्याप्त हो। जनसंख्या की संरचना भी महत्वपूर्ण तथ्य होती है। किसी भी देश के आर्थिक विकास में भौतिक पूंजी के साथ-साथ मानवीय पूंजी का भी विशेष स्थान है और यह माना जाने लगा है कि वास्तव में पूंजी में वृद्धि मानव पूँजी निर्माण पर निर्भर करती है जो देश के व्यक्तियों का ज्ञान कुशलता एवं क्षमताऐं बढाने की प्रक्रिया है।'' मानवीय साधन का विकास ज्ञान योग्यता व समाज के सभ्य होने वाली प्रक्रिया है। आर्थिक अर्थो में यह कहा जा सकता कि यह मानवीय पूंजी का संचय है जिसका अर्थव्यवस्था के विकास में प्रभावशाली विनियोग किया जाता है।''[11] इस दृष्टिकोण से भी हम अपने देश को समृद्ध मान सकते है। हमारे देश में कुल जनसंख्या में कार्यशील जनसंख्या (15 से 64 के मध्य) आर्श्रित जनसंख्या (14 वर्ष से कम एवं 65 वर्ष से अधिक) 37 वर्ष तक अधिक रहेगी।[12]

यह जनांकिकी लाभांश आर्थिक विकास पर गहरा प्रभाव डालता है। यदि महिला सशक्तिकरण शिक्षा एवं कौशल विकास तथा रोजगार उपलब्ध कराने की योजनाओं को उचित तरीके से क्रियान्वित किया जाए तो जनसंख्या की वृद्धि को चुनौती की जगह अवसर में बदल कर लाभ प्राप्त किया जा सकता है। समृद्धि के सामान्य अर्थ भौतिक पूंजी की मात्रा के हिसाब से भी हमारे देश को समृद्ध कहा जा सकता है। हमारा विदेशी मुद्रा भंडार 27/8/21 को 16,663 से बढकर 633,558 अरब डालर के रिकार्ड स्तर पर पहुँच गया।[13] अतः समृद्धि शब्द एक राष्ट्र की दृष्टि से बहुआयामी अर्थ रखता है।

संदर्भ -

1. दैनिक भास्कर 7 सितम्बर 2021, 10 सिविल लाइन सागर म.प्र. पृ.1
2. नागर, डॉ. व्ही.डी., भारतीय अर्थव्यवारथा - म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, 2007 पृ. 10
3. महाचार्य, डॉ. ए.वी., भारत में आर्थिक नियोजन - रतन प्रकाशन मंदिर आगरा 1993 पृ. 3
4. मिश्रा, भारद्वाज, अर्थशास्त्र राम प्रसाद एवं संस आगरा, 2002, पृ. 19
5. वही पृ. 10

6. संदर्भ 2 पृ. 15
7. वही पृ. 11
8. गुप्त, शिवभूषण, कृषि अर्थशास्त्र-एस. बी.पी.डी पब्लिशिंग हाऊस, आगरा, 2014, 15 पृ. 13
9. वही पृ. 27
10. मिश्र, डॉ. जे.पी., संवृद्धि एवं विकास का अर्थशास्त्र, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, 2010 पृ. 187
11. गुप्ता, एस, जनांनिकी-कैलास पुस्तक सदन, भोपाल, पृ. 190
12. https://drishtiias.com.
13. https://www.amarujala.com